ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No: UPBIL04292,
RNI REG.No.:UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No. 561/2013-14
Vol.-5, No.-I, PP-116-119, YEAR JUNE 2016

स्वतंत्र भारत में आधी आबादी की स्वतंत्रता की वास्तविकता

❑ डॉ0 मीनाक्षी व्यास

आजादी की परिभाषा हर किसी के लिये अलग–अलग होती है, जब हम सभी आजाद दे ा में रहते हैं तो सभी को अपनी बात कहने का समान अधिकार क्यों नहीं है ? समाज ने भले ही बहुत प्रगति कर ली हो, पर आज भी एक लड़की की जिंदगी से जुड़े सभी निर्णय दूसरे ही लोग लेते हैं। भारतीय महिलाओं का एक वर्ग आज भी ऐसा है जो अपने बारे में कोई निर्णय नहीं ले पाता है। उन्हें पढ़ना है या नहीं पढ़ना है, क्या पढ़ना है, कहाँ पढ़ना है किस–किस तरह की नौकरी कर सकती है ये सारे निर्णय परिवार का कोई पुरूष सदस्य ही लेता है। हर तरीके से समाज प्रगति कर चुका है इसके बावजूद आज भी महिलाओं के प्रति होने वाली हिंसा में कोई कमी नहीं दिखाई देती। ने ानल, क्राइम रिकार्ड ब्यूरो के अनुसार दे ा भर में बलात्कार के 26,735 मामले दर्ज हुये। ऐसे मामलो की तो कोई गिनती ही नहीं है जहाँ पीड़िता अपने और अपने परिवार की इज्जत की डर से पुलिस के पास जाती ही नहीं है। बलात्कार के साथ आज भी एक सामाजिक कंलक जुड़ा हुआ है। दोषी न होते हुये भी समाज में चेहरा उसे ही छिपाना पड़ता है। जबकि दोषी बिना किसी डर, भार्म के समाज में खुलेआम घूमता है। एसिड सर्वाइवर्स ट्रस्ट इण्टरने ानल (एएसटीआई) के अनुसार हर वर्ष वि व में औसतन 1500 एसिड हमले के मामले दर्ज होते है, जिनमें से सबसे अधिक ए िया में होते हैं। ए िया में भारत एसिड अटैक हमले में सबसे ऊपर है। यहाँ प्रत्ये वर्ष लगभग 1000 एसिड हमले किये जाते हैं। अधिकां ा मामलों में रिपोर्ट दर्ज न करने के कारण ने ानल क्राइम रिकार्ड व्यूरो में यह संख्या चार सौ तक ही पहुँच पाती है। सरकार और अदालत एसिड के हमलों को रोकने के लिये कड़े कदम उठा रही है लेकिन इसके बावजूद एसिड से महिलाओं पर होने वाले हमले पिछले दो वर्षों में तीन गुना तक बढ़े हैं। 2002 से 2014 के बीच 1939 मामले दर्ज हुये। 305 को सजा हुई 13 लोगों को फाँसी दी गई, 116 लोगों को उम्र कैद की सजा दी गई। 75 से 80 प्रति ात पीड़ित महिलायें और लड़कियाँ है जिसमें से 30 प्रति ात एसिड अटैक पीड़िता 18 साल से कम उम्र की है।

मासूमों से बलात्कार की घटनायें रूकने का नाम नहीं ले रही है। बच्चियां घर बाहर कहीं सुरक्षित नहीं है। वर्ष 2016 तक 26 बच्चियां या कि ाोरी अपराधियों की ि ाकार हो चुकी हैं। पिछले 22 दिन के आकड़ो को देखने से पता चलता है कि औसत हरतीसरे दिन वारदात हुई। प्राकृतिक आपदाओं में भी बहुत कुछ त्रासदी झेलने के बाद भी महिलायें इन्सानी लोभ का ि ाकार बनती है। उन्हें दासता या वै यावृत्ति में धकेल दिया जाता है। उनसे सारी पहचानें छीनकर सामाजिक रि तों से दूर करके बनाकर मरने के लिये छोड़ दिया जाता है। मानव तस्करी, हथियारों और मादक पदार्थों के व्यापार से भी ज्यादा तेजी से बढ़ रही है। लखनऊ में 'अलायंस नई आ ाा' नामक एन0जी0ओ0 चलाने वाली विनीता बताती है कि "जब राहत सामग्री भूकम्पग्रस्त नेपाल पहुँचानी भाुरू हुई तो कोठा मालिकों ने राहत सामग्री देकर तस्करों को वहाँ भेजना भाुरू कर दिया, भूकम्प के कुछ दिनों के अन्दर ही लखनऊ के कोठों में नेपाली लड़कियों की संख्या अचानक बढ़ गई। दिल्ली में जीबी रोड स्टिंग अभियान के समय तस्कार विरोधी

❑ विभागाध्यक्ष– समाज ाास्त्र विभाग, रा0स्व0ग्रा0उ0पी0जी0 कालेज, पुखरायां, कानपुर देहात (उ0प्र0) भारत

संगठन भाक्ति वाहिनी के ऋषिकान्त ने कहा "उस स्थान पर सारी नेपाली लड़कियां हैं, वे लोग उनसे तबाह हो चुके गाँवों में राहत सामग्री ले जा रहे थे, पता नही उन्होंने ऐसा क्या कहा कि तबाही वाले इलाके की युवा लड़कियों को बरगलाना आसान हो गया है।"2

पि चमी समाजिक मनोविज्ञानी नाओमी–बुल्फ ने अपनी भाोधपूर्ण किताब "द ब्यूटी मिथ हाउ इमेजेज आफ ब्यूटी आर यूज्ड अंगेस्ट विमेन" में लिखा है कि यदि कोई पुरूष किसी स्त्री की सुन्दरता का उदाहरण देता है, तो ज्यादातर मामलों में वह स्त्री को कोई यौन संदे ा देने की कोि ा ा करता है। इस सन्दर्भ में अगर दिल्ली के पूर्व कानून मंत्री सोमनाथ भारती के बयान को देखे जिसमें उन्होंने कहा था कि अगर पुलिस दिल्ली सरकार के हाथों में आ जाये ंतो गहनों से लदी सुन्दर से सुन्दर महिला रात को 12 बजे बेखौफ सड़को पर अकेली घूम सकती है।" महिलाओं को उनकी सुदंरता या उनके भाारीरिक सौंदर्य से आंकने की उनकी मानसिकता इस संद्रिधन के बावजूद कठघरे में है। प्रमुख मुद्दा उस सामाजिक व्यवहार का है जिसमें स्त्री–पुरूष के बीच टीका–टिप्पणियों को सुन्दर कहा जाय और देह दृष्टि के आधार पर उसकी तारीफ की जाय तो वह प्रसन्न होगी, मगर यह वास्तविकता नहीं है। आज जिन ऊँचें मुकामों पर स्त्रियाँ है। क्या वे देह सौंदर्य के कारण है ?इंदिरा नुई, चंदा कोचर, नि ाा देसाई, विस्वाल, किरण मजूमदार, सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल, सुषमास्वराज, ज्वाला गट्टा जैये अनेक उदाहरण हमारे सामने है।3 अगर इनकी प्र ांसा देह की सुन्दरता से की जाय तो यह उनके लिये कितना कष्टकारी होगा। एक साधारण स्त्री को भी सिर्फ उसकी सुंदरता से आकने का सीधा मतलब यही है कि उसकी वास्तविक योग्यताओं और क्षमताओं को कम अथवा नगण्य करके देखा जा रहा है। भारत में अभी तक स्त्री को सिर्फ भाारीरिक सुन्दरता के पैमाने से देखा जाता रहा है, किन्तु स्त्रियों को उनकी सांस्कृतिक देह में ढालकर देखने की आव यकता महिलाओं को डायन बताकर सताना मार डालना भी एक क्रूर तरीका है। कुछ वर्ष पूर्व राँची से 35 किमी0 दूर एक गाँव में पाँच औरतों को 'डायन' बताकर हत्या कर दी गई थी। आकड़ें बताते हैं कि झारखण्ड में बीते दस साल में डायन बताकर करीब 1200 महिलाओं की हत्या की जा चुकी है। जबकि 15 नवम्बर 2000 को झारखण्ड राज्य के गठन के साथ ही राज्य में 'डायन प्रथा रोकथाम अधिनियम' लागू कर दिया गया था, फिर ऐसा क्यों हो रहा है कि 'डायन' कहकर वहाँ महिलाओं की हत्या की जा रही है। झारखण्ड ही नहीं असम, राजस्थान, बिहार और दे ा के अन्य प्रान्तों में भी यह बर्वरता जारी है। एक गैर–सरकारी संगठन 'सरल लिटिगे ान ऐड एनटाइटिलमेन्ट केन्द्र' द्वारा किये गये एक सर्वे के अनुसार हर साल 150–200 महिलाओं को डायन बताकर मार डालर जाता है। क्या वास्तव में किसी स्त्री को 'डायन' घोषित करना एक प्रथा है या प्रथा के नाम पर पुरूष सत्तात्मक समाज की गहरी कुटिलता या शडयंत्र है ? अधिकां ात यह देखा गया है कि जो त्री डायन घोषित की जाती है वे ज्यादातर विधवा या फिर परिवार के आपसी झगड़ों की ि ाकार होती है। उनकी सम्पत्ति व जमीन पर गाँवों के दंबगों की कुदृष्टि होती है जो महिलायें प्रभाव ााली लोगों के सामने समपर्ण करने से मना कर देती है, वे भी इस साजि ा का ि ाकार होती है। उनका दैहिक भाोषण भी किया जाता है, कई बार उनकी हत्या भी कर दी जाती है। यह वह सत्य है जिसे प्रथा के नाम पर ढ़कने कर न जाने कितने द ाकों से प्रयास किया जा रहा है।

23 जून का दिन विधवा दिवस को समर्पित किया गया है। विधवाओं की संख्या के आधार पर भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा दे ा है, विधवाओं के बारे में एक किताब छपी है– परछाइयों का जीवनः विधवा अवस्था, इसके एक लेख के अनुसार, 'विधवाओं को अन्य महिलाओं को अच्छी लगने वाली विविध सामाग्रियों का इस्तेमाल करना मना है।'2

है कि दे ा के विभिन्न हिस्सों में लड़कियों को जींस आदि पहनने तथा मोबाइल जैसे, आधुनिक संचार माध्यमों का उपयोग करने पर विभिन्न सामाजिक समूहों की ओर से आपत्ति जताई गई और चेतावनी दी गई कि ये आदे ा नहीं मानने वाली लड़कियों, महिलाओं को सबक सिखाया जायेगा। इन बातों को गंभीरता से सोचने की जरूरत है कि आखिर इस तरह के फतवे–फरमानों का औचित्य क्या है ? इस तरह की सोच रखने और संस्कृति के स्वयं भू ठेकेदार बनने वाले ये लोग दे ा को किस दि ाा में ले जायेंगे। यह स्याह पन्ना है परन्तु दूसरी तरफ उजली तस्वीर भी है। इस षडयन्त्र की ि ाकार रही कुछ महिलाओं ने इस अत्याचार का विरोध किया। असम में 'द प्रिवें ान आफ एंड प्रोटेक् ान फ्राम विच हटिंग बिल'लाने में आदिवासी ग्रामीण महिला बीरूबाला राना की सबसे सक्रिय भूमिका रही है। अपनी जिन्दगी की चिन्ता छोड़ अब तक 42 से अधिक महिलाओं को इस षडयन्त्र का ि ाकार बनने से बचाया है। बीरूबाला की ही तरह, झारखण्ड के सरायकेला की 'छुटनी महतो' तथा राँची की 'पूनम टोप्पो' ने नाटकों के माध्यम से कथित परम्परा के नाम पर होने वाले इस षडयन्त्र के खिलाफ जंग छेड़ रही है।4 इस दे ा में 'आधी आबादी' को जन्म ही नहीं लेने दिया जाता उसका क्या ? कन्या भ्रूण हत्यायें सबसे ज्यादा भारत में ही होती है। उन अजन्मी बच्चियों का दर्द कौन महसूस करेगा जिनसे जन्म लेने की आजादी भी छीन ली जाती है।

प्रबन्धन संभालने में महिलाओं का कोई जोड़ नहीं है, फिर वह चाहे घर का हो या कंपनी का। यही कारण है कि कम्पनियों में महिला निदे ाकों की संख्या एक साल में दोगुने से भी ज्यादा है। नये कम्पनी एक्ट में महिला निदे ाकों की नियुक्ति अनिवार्य करने के बाद इसका ग्राफ तेजी से बढ़ा है। 'इंस्टीट्यूट ऑफ कम्पनी सेकेट्रीज आफ इण्डिया' के कानपुर चैप्टर के सचिव कौ ाल सक्सेना के अनुसार यह फैसला इस तथ्य को द ार्ाता है कि महिलाओं में नेतृत्व क्षमता किसी भी दृष्टिकोण से पुरूषों से कम नहीं है।" वि ाालकाय कॉरपोरेट हाउसों की कमान भी महिलाओं के पास है। किरन भार्मा – एक्सिस बैंक की प्रबन्ध निदे ाक, किरन मजूमदार – भॉ बॉयोकान इण्डस्ट्री की चेयरमैन, नैनालाल किदवई – एच0एस0वी0सी0 इण्डिया की मुख्य जनरल मैनेजर, चंदा कोचर – आई0सी0आई0सी0आई0 बैंक की प्रबंध निदे ाक और सी0ई0ओ0, सिमोन टाटा लक्मे की चेयरमैन, नीलम धवन – एचपी इण्डिया की प्रबन्ध निदे ाक, मात्र दस साल में लेदर एक्सपोर्ट के बिजनेस में तीन सम्मान और करोड़ों का टर्न ओवर देने वाली प्रेरणा वर्मा एक्सपोर्ट प्रमो ान कांउसिल ऑफ इण्डिया की ओर से हैडीक्राफ्ट सेगेमेंट से सम्मानित भी हो चुकी है।6 सुनीता कृष्णनन हैदराबाद में स्वयंसेवी संगठन प्रज्जवला की पूर्णकालिक सदस्य व सहसंस्थापक है। जहाँ एक साधारण महिला दुष्कर्म का ि ाकार होने पर मौत को गले लगा लेती है वही सुनीता कृष्णनन ने इस संस्था के जरिये यौन भोषण व यौन तस्करी का ि ाकार हो रही महिलाओं व बच्चों को बचाने व उनको मुख्य धारा से जोड़ने का काम करती है। कर्नाटक में रहने वाली सालूमरदा अपने अनोखे अंदाज में प्रकृति की सेवा कर रही हैं। हाइवे की चार किलोमीटर के मार्ग पर वे अब तक 384 बरगद के पेड़ लगा चुकी हैं। इन पेड़ों की देखभाल अब कर्नाटक सरकार कर रही है। थिमक्कास को इन कार्य के लिये कई पुरस्कार भी मिल चुके हैं। लॉस एजिल्स, ऑकलैण्ड व कैलिफोर्निया में काम कर रही अमेरिकी पर्यावरण संस्था का काम 'थिमकस रिसोर्स फार एनवायरमेण्ट एजुके ान' उनके नाम पर ही रखा गया है। बड़ी बात तो यह है उन्होंने कोई औपचारिक ि ाक्षा नहीं प्राप्त की। यह संस्थान इन्होंने संतान न होने के दुख को रोकर नहीं बनाया, बल्कि पेड़ के रूप में बेटों को जन्म देना भाुरू कर दिया।7 लोकसभा में 66 महिलाओं की जीत महिलाओं की राजनीतिक स्थिति को स्पष्ट कर रही है।

एक महत्वपूर्ण बात यह है कि संसार का मुखिया कहलाने वाले दे ा अमेरिका में अभी तक एक भी महिला राष्ट्रपति के ओहदे तक नहीं पहुँची जबकि

भारत में प्र ाासनिक और वैचारिक अगुवाई की कमान युगों से उनके हाथ में रही है। अपाला, लोपामुद्रा, रजिया सुल्तान, इन्दिरा गाँधी, प्रतिभा देवी सिंह पाटिल आदि यह सूची बहुत लम्बी है। ऊँची उड़ान के लिये सदैव तत्पर रहने वाली आधी आबादी आज बहुत कुछ बदलने के बाद भी स्वयं को असुरक्षित ही महसूस कर रही है। महिला पुलिस कर्मियों की संख्या में बढ़ोत्तरी, सख्त कानून और सरकार के दावों के बावजूद महिलाओं के खिलाफ अपराध की घटनाओं में लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है। महिलाओं के खिलाफ आधे से अधिक अपराध केवल पाँच राज्यों आन्ध्र प्रदे ा, पं0 बंगाल, उत्तर प्रदे ा, राजस्थान और मध्य प्रदे ा में हुये हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि दे ा की आजादी तो 15 अगस्त 1947 को मिल गई थी परन्तु आधी आबादी को अपनी आजादी के लिये अभी और संघर्ष करना होगा। किसी ने ठीक ही कहा है कि "दिल को इसी फरेब में रखा है उम्र भर इस इम्तिहां के बाद कोई इम्तिहां नही होगा"

****

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दुस्तान – रविवार 23, अगस्त 2015
2. इण्डिया टुडे – 12 अगस्त, 2015 पेज–17
3. प्रवाह – अमर उजाला, 8 अगस्त 2015
4. अमानवीयता जिसे हम प्रथा कहते हैं – ऋतु सारस्वत – हिन्दुस्तान – 17 अगस्त, 2015
5. दैनिक जागरण – 27 जून 2015
6. हिन्दुस्तान – 9 मार्च, 2015
7. हिन्दुस्तान – 8 मार्च, 2015